The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा का विकास

मो जमशेद आलम

रिसर्च स्कॉलर, जे०आर०एफ० (एजुकेशन), मानू कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, दरभंगा

ईमेल: jamshedalam2487@gmail.com

सैय्यद रजाउर रहमान

रिसर्च स्कॉलर, जे०आर०एफ० (एजुकेशन), मानू कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, दरभंगा

ईमेल: rahmanr869@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18919243

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान प्रणाली, मूल्य आधारित शिक्षा, शिक्षक दृष्टिकोण, नैतिक विकास, समग्र शिक्षा।

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का परीक्षण करना तथा शिक्षकों की धारणा का विश्लेषण करना था। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में शिक्षा प्रणाली अधिकतर कौशल एवं रोजगार उन्मुख होती जा रही है, जिसके कारण नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा देखी जा रही है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समग्र एवं मूल्यपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो शिक्षा को चरित्र निर्माण, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मविकास से जोड़ती है। यह अध्ययन मात्रात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। दैव नमूना विधि द्वारा चयनित 60 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों से स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े संकलित किए गए। प्रतिक्रियाएँ पाँच-बिंदु लाइकरट मापनी पर आधारित थीं। आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं माध्य के माध्यम से किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि 70% से अधिक शिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली को मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी मानते हैं (Mean = 4.16)। 73.3% शिक्षकों का दृष्टिकोण इसकी प्रभावशीलता के प्रति सकारात्मक पाया गया (Mean = 4.05)। नैतिकता,

अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों के विकास में भी 75% से अधिक सहमति प्राप्त हुई तथा सभी के लिए माध्य 4 से अधिक रहा। इसके अतिरिक्त 80% शिक्षकों ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन का समर्थन किया (Mean = 4.22)। सभी शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं। निष्कर्षतः यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा को सुदृढ़ करने में प्रभावी एवं प्रासंगिक है। शिक्षकों की सकारात्मक धारणा यह संकेत करती है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा में समुचित रूप से समाहित कर विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास, नैतिक चेतना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक रही है, जिसने मानव सभ्यता के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल वैदिक ग्रंथों और दर्शन तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र–शिक्षा, समाज, संस्कृति, विज्ञान, चिकित्सा, पर्यावरण तथा शासन व्यवस्था–में मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करती रही है। इस ज्ञान प्रणाली में मानव जीवन को समग्र दृष्टिकोण से देखा गया है, जहाँ ज्ञान, नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय प्रमुख उद्देश्य रहा है (Jeevan Kumar, 2025)। प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा को चरित्र निर्माण, आत्म-अनुशासन, नैतिकता तथा जीवन मूल्यों के विकास से जोड़ा गया था। गुरु-शिष्य परंपरा में शिक्षा केवल संज्ञानात्मक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह व्यक्तित्व विकास, सामाजिक व्यवहार और आध्यात्मिक चेतना को भी विकसित करती थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता जैसे मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया था (Joshi et al., 2025)। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति तथा प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था के प्रभाव से शिक्षा अधिकतर कौशल, रोजगार और आर्थिक उत्पादकता केंद्रित हो गई है। परिणामस्वरूप नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनाओं में कमी देखी जा रही है। अनेक विद्वानों ने यह चिंता व्यक्त की है कि आधुनिक

शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा की उपेक्षा हो रही है, जिससे छात्रों में नैतिक पतन, सामाजिक असंतुलन और आत्म-केंद्रित प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है। इसलिए मूल्य आधारित शिक्षा की पुनर्स्थापना वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में अत्यंत आवश्यक हो गई है (Joshi & Sonara, 2024)। भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक वैकल्पिक और समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह प्रणाली ज्ञान को केवल सूचना के रूप में नहीं, बल्कि जीवन दर्शन और सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में प्रस्तुत करती है। आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान के तत्वों का समावेशन सतत विकास, पर्यावरणीय चेतना, नैतिक नेतृत्व तथा सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है (Jain, 2025)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा, स्थानीय ज्ञान, कला, संस्कृति तथा परंपरागत ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया गया है। नीति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उन्मुख कौशल विकास नहीं, बल्कि छात्रों का समग्र विकास और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाना है (Bharali, 2025)। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से छात्रों में सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय चेतना, नैतिक मूल्य और सामाजिक समरसता विकसित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान प्रणाली उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विद्वानों ने यह सुझाव दिया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक उच्च शिक्षा में समाहित करने से सतत विकास, सामाजिक न्याय तथा वैश्विक चुनौतियों के समाधान में योगदान दिया जा सकता है (Lal et al., 2024)। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के लिए एक प्रासंगिक और उपयोगी ज्ञान स्रोत है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा को किस प्रकार सुदृढ़ कर सकती है तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास में किस प्रकार योगदान दे सकती है।

समीक्षा साहित्य

भारतीय ज्ञान प्रणाली और मूल्य आधारित शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। Das (2023) ने भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अध्ययन करते हुए बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, नैतिकता, मानवता और शिक्षा का गहन समन्वय है, जो आधुनिक शिक्षा

प्रणाली को समृद्ध करने की क्षमता रखता है। Dutta और Geeta (2024) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा के एकीकरण पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली छात्रों के बौद्धिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर समान रूप से बल देती थी, जो समकालीन शिक्षा के लिए एक आदर्श मॉडल हो सकता है। Shrimalibhoi और Patel (2024) ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण में शिक्षकों, विद्यालयों और सरकार की भूमिका पर अध्ययन किया और पाया कि पाठ्यक्रम विकास, शिक्षण विधियों में नवाचार तथा नीति समर्थन के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को प्रभावी रूप से आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जा सकता है। Jacob और Gaur (2023) ने माध्यमिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन पर अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि यह प्रणाली छात्रों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है तथा समग्र विकास को बढ़ावा देती है। Mehta और Singh (2023) ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन करते हुए यह बताया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली दर्शन, विज्ञान, कला और आध्यात्मिकता का एक व्यापक ज्ञान भंडार है, जो आधुनिक समाज और शिक्षा की चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकती है। Joshi और Sonara (2024) ने आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा पर शोध करते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि छात्रों के चरित्र और मूल्यों का निर्माण करना भी होना चाहिए। उन्होंने मूल्य शिक्षा की विभिन्न विधियों और दृष्टिकोणों पर भी प्रकाश डाला। Joshi et al. (2025) ने आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनः समावेशन पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन भारतीय शिक्षा के सिद्धांत आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों के साथ सामंजस्य रखते हैं, जैसे कि अंतर्विषयक अध्ययन, अनुभवात्मक शिक्षण और नैतिक मूल्यों का विकास। Sharma, Awasthi और Soni (2023) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता पर अध्ययन करते हुए बताया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य मानव कल्याण और सतत विकास को बढ़ावा देना है तथा यह ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन के समन्वय पर आधारित है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विद्वानों ने यह भी रेखांकित किया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में सम्मिलित करने से छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक पहचान और नैतिक चेतना का विकास संभव है। कई अध्ययनों में यह सुझाव दिया गया है कि मूल्य आधारित शिक्षा के विकास के लिए पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में समाहित करना आवश्यक है, जिससे शिक्षा अधिक मानवीय और समग्र बन सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में शिक्षा प्रणाली में तीव्र परिवर्तन हो रहा है। आधुनिक शिक्षा अधिकतर कौशल, प्रतियोगिता और रोजगार उन्मुख होती जा रही है, जिसके कारण नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा होती प्रतीत हो रही है। इस परिदृश्य में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है, ताकि विद्यार्थियों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक ऐसी समृद्ध ज्ञान परंपरा है, जो शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रखकर चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का अध्ययन वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता है। यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी दृष्टिकोण का प्रभुत्व अधिक है, जबकि भारतीय संदर्भ और सांस्कृतिक मूल्यों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित नैतिकता, सह-अस्तित्व, आत्मसंयम, सामाजिक समरसता, पर्यावरण चेतना तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवतावादी और समग्र बना सकते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में किस प्रकार प्रभावी रूप से समाहित किया जा सकता है। इस अध्ययन का महत्व शिक्षकों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं तथा पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए भी अत्यधिक है। शोध के निष्कर्ष शिक्षा नीति निर्माण, पाठ्यक्रम विकास तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्य आधारित दृष्टिकोण को समाहित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन विद्यार्थियों में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्मनिर्भरता तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। अतः यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा को सुदृढ़ बनाकर समाज में नैतिकता, सामाजिक समरसता और जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को भी बल मिलेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।
3. यह पता लगाना कि भारतीय ज्ञान प्रणाली छात्रों में नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों के विकास में किस प्रकार योगदान देती है।
4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन के प्रति शिक्षकों की धारणा का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_{01}: भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी नहीं है।

H_{02}: शिक्षकों के दृष्टिकोण में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H_{03}: भारतीय ज्ञान प्रणाली छात्रों में नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों के विकास में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती है।

H_{04}: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन के संबंध में शिक्षकों की धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अनुसंधान विधि

पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मात्रात्मक शोध पद्धति (Quantitative Research Method) पर आधारित है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। इस पद्धति के माध्यम से शिक्षकों के दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का अध्ययन किया गया।

नमूना एवं नमूना चयन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए नमूने का चयन दैव नमूना विधि (Random Sampling Technique) द्वारा किया गया। अध्ययन के लिए विभिन्न विद्यालयों से कुल 60 शिक्षकों का चयन किया गया। नमूने में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षक सम्मिलित थे, जिससे अध्ययन के निष्कर्षों को सामान्यीकृत किया जा सके।

शोध उपकरण

अध्ययन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली (Self-Developed Questionnaire) का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में भारतीय ज्ञान प्रणाली, मूल्य आधारित शिक्षा तथा विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास से संबंधित कथनों को सम्मिलित किया गया। प्रश्नावली में लाइकरट प्रकार (Likert Scale) के कथनों का प्रयोग किया गया, ताकि शिक्षकों के दृष्टिकोण को मात्रात्मक रूप में मापा जा सके।

विश्लेषण तकनीक

संकलित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत (Percentage) तथा माध्य (Mean) के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिकाओं और वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, ताकि अध्ययन के निष्कर्षों की स्पष्ट व्याख्या की जा सके।

विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित संकलित आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का परीक्षण करना तथा शिक्षकों की धारणा का विश्लेषण करना है।अध्ययन में 60 शिक्षकों से स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े संकलित किए गए। प्रतिक्रियाएँ पाँच-बिंदु लाइकरट मापनी (पूर्णतः सहमत से पूर्णतः असहमत तक) पर आधारित थीं। आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं माध्य (Mean) के आधार पर किया गया।

उद्देश्य 1 भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का अध्ययन करना।

तालिका 4.1 भारतीय ज्ञान प्रणाली और मूल्य आधारित शिक्षा

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत	अंक (स्कोर)
पूर्णतः सहमत	20	33.3%	5
सहमत	22	36.7%	4
अनिश्चित	8	13.3%	3
असहमत	6	10%	2
पूर्णतः असहमत	4	6.7%	1
कुल	60	100%	

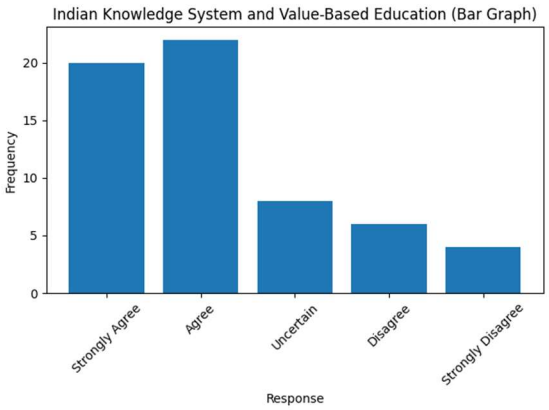

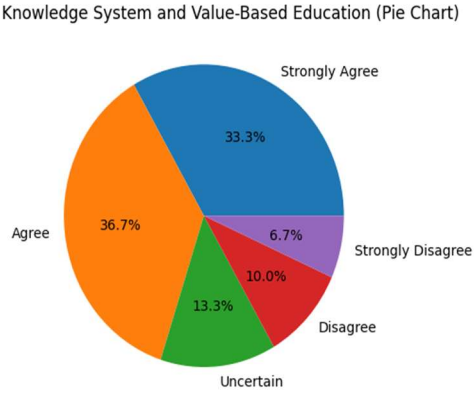

माध्य (Mean) = 4.16

विश्लेषण (Analysis)

तालिका 4.1 के आधार पर स्पष्ट होता है कि कुल 60 शिक्षकों में से 20 (33.3%) पूर्णतः सहमत तथा 22 (36.7%) सहमत हैं, अर्थात कुल 70% से अधिक उत्तरदाता भारतीय ज्ञान प्रणाली को मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी मानते हैं। केवल 16.7% उत्तरदाता असहमति की श्रेणी में आते हैं, जबकि 13.3% अनिश्चित हैं। यह वितरण स्पष्ट रूप से सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाता है। प्राप्त माध्य 4.16 यह संकेत करता है कि प्रतिक्रियाएँ उच्च स्तर की सहमति की ओर झुकी हुई हैं। चूँकि माध्य 3 (तटस्थ स्तर) से काफी अधिक है, अतः यह परिणाम सांख्यिकीय रूप से भी सकारात्मक रुझान को दर्शाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षकों के दृष्टिकोण में भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल्य शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है।

व्याख्या (Interpretation)

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित नैतिकता, सह-अस्तित्व, आत्मसंयम तथा सामाजिक समरसता जैसे तत्व मूल्य आधारित शिक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया यह दर्शाती है कि वे भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में भी उपयोगी मानते हैं। यह परिणाम इस तथ्य को पुष्ट करता है कि आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के समावेशन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा सामाजिक चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती है। अतः इसे मूल्य आधारित शिक्षा के एक प्रभावी माध्यम के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

परिकल्पना परीक्षण (H_{01})

परिकल्पना H_{01} के अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी नहीं है। किंतु प्राप्त परिणामों में 70% से अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा 4.16 का उच्च माध्य यह सिद्ध करता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से सकारात्मक है। चूँकि माध्य तटस्थ स्तर (3) से अधिक है और बहुमत सहमति में है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसके स्थान पर वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी है।

उद्देश्य 2 शिक्षकों के दृष्टिकोण से भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।

तालिका 4.2

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
सकारात्मक दृष्टिकोण	44	73.3%
तटस्थ	8	13.3%
नकारात्मक	8	13.3%
कुल	60	100%

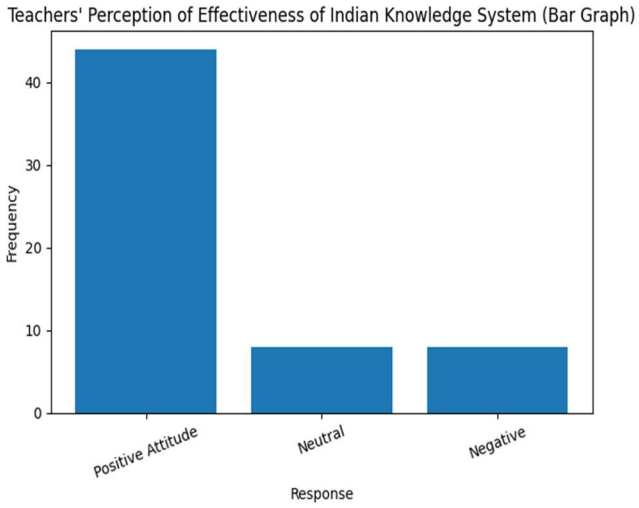

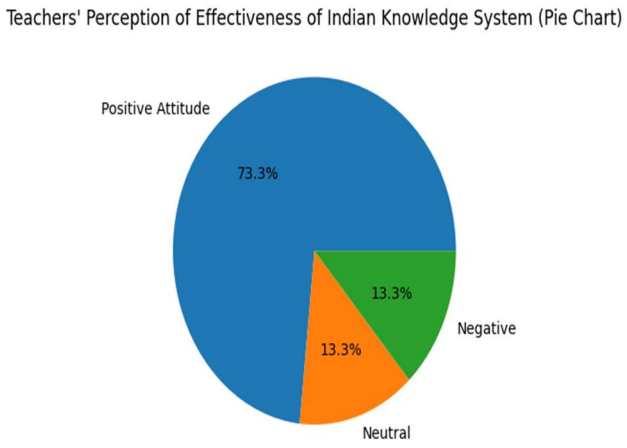

माध्य (Mean) = 4.05

विश्लेषण (Analysis)

तालिका 4.2 के अनुसार कुल 60 शिक्षकों में से 44 (73.3%) का दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति सकारात्मक पाया गया, जबकि 8 (13.3%) शिक्षक तटस्थ तथा 8 (13.3%) नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। यह वितरण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शिक्षकों का बहुमत भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता को स्वीकार करता है। सकारात्मक प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत तटस्थ एवं नकारात्मक प्रतिक्रियाओं की तुलना में काफी अधिक है, जो एक सुदृढ़ सकारात्मक प्रवृत्ति को इंगित करता है। प्राप्त माध्य 4.05 यह दर्शाता है कि औसत प्रतिक्रिया सहमति की श्रेणी में आती है। चूँकि माध्य 3 (तटस्थ स्तर) से अधिक है, इसलिए यह परिणाम शिक्षकों के दृष्टिकोण में सकारात्मक झुकाव को प्रमाणित करता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा की दृष्टि से उपयोगी एवं प्रभावी मानते हैं।

व्याख्या

उपरोक्त परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी माध्यम मानते हैं। उनका सकारात्मक दृष्टिकोण इस बात का संकेत है कि वे इसे केवल पारंपरिक ज्ञान नहीं, बल्कि वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में प्रासंगिक मानते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षक मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता को समझते हैं तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को उसके लिए उपयुक्त आधार मानते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि भविष्य में इसके समावेशन की संभावनाएँ भी सशक्त हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षकों के लिए एक व्यवहारिक एवं नैतिक मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार्य प्रतीत होती है।

परिकल्पना परीक्षण (H_{02})

शून्य परिकल्पना H_{02} के अनुसार शिक्षकों के दृष्टिकोण में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। किंतु प्राप्त परिणामों में 73.3% सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा 4.05 का माध्य स्पष्ट रूप से सकारात्मक झुकाव को दर्शाता है। चूँकि माध्य तटस्थ स्तर से अधिक है और सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ बहुमत में हैं, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसके स्थान पर वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि शिक्षकों के दृष्टिकोण में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रभावशीलता के संबंध में महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रवृत्ति पाई जाती है।

उद्देश्य 3 भारतीय ज्ञान प्रणाली छात्रों में नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता के विकास में किस प्रकार योगदान देती है।

तालिका 4.3 विभिन्न मूल्यों के विकास पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया

मूल्य	सहमत (%)	माध्य
नैतिकता	82%	4.20
अनुशासन	78%	4.10
सामाजिक उत्तरदायित्व	80%	4.18
आत्मनिर्भरता	75%	4.05

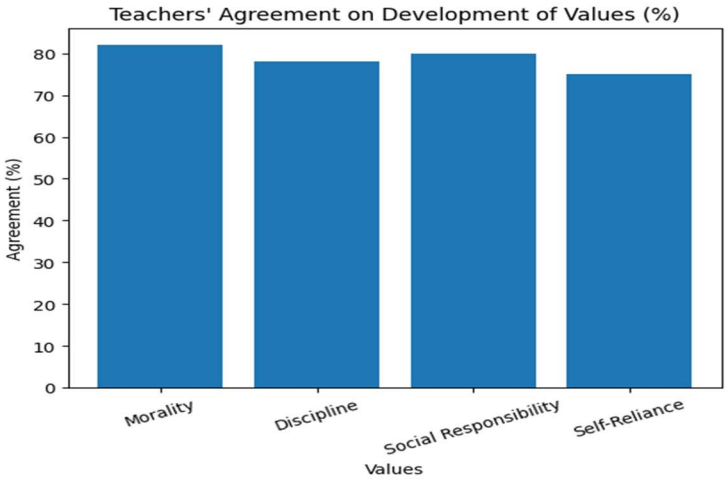

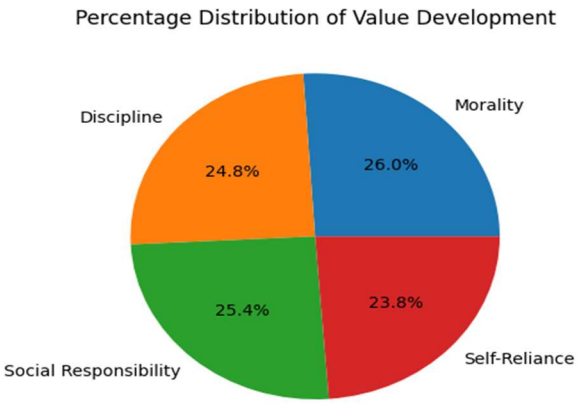

विश्लेषण

तालिका 4.3 से स्पष्ट होता है कि नैतिकता (82%), सामाजिक उत्तरदायित्व (80%), अनुशासन (78%) तथा आत्मनिर्भरता (75%) के संबंध में शिक्षकों की सहमति का प्रतिशत अत्यधिक है। इन सभी मूल्यों के लिए प्राप्त माध्य 4 से अधिक है, जो उच्च स्तर की सकारात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। विशेष रूप से नैतिकता (Mean = 4.20) एवं सामाजिक उत्तरदायित्व (Mean = 4.18) के लिए सर्वाधिक समर्थन प्राप्त हुआ है। यह संकेत करता है कि शिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली को चरित्र निर्माण का एक सशक्त माध्यम मानते हैं। अनुशासन एवं आत्मनिर्भरता के संबंध में भी माध्य क्रमशः 4.10 एवं 4.05 है, जो स्पष्ट रूप से सहमति की श्रेणी में आता है। चूँकि सभी मूल्यों के लिए माध्य तटस्थ स्तर (3) से काफी अधिक है, अतः यह परिणाम भारतीय ज्ञान प्रणाली के सकारात्मक प्रभाव को प्रमाणित करता है।

व्याख्या

उपरोक्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गुरु-शिष्य परंपरा, आत्मसंयम, कर्तव्यबोध तथा सह-अस्तित्व जैसे सिद्धांत छात्रों में नैतिक चेतना एवं सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर चरित्र निर्माण से जोड़ा गया है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अनुशासन एवं आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का विकास संभव होता है। यह व्याख्या इस तथ्य को पुष्ट करती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा का एक प्रभावी आधार प्रदान करती है।

परिकल्पना परीक्षण (H_{03})

शून्य परिकल्पना H_{03} के अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली छात्रों में नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता के विकास में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती है। किंतु प्राप्त परिणामों में सभी मूल्यों के लिए 75% से अधिक सहमति तथा 4 से अधिक का माध्य स्पष्ट रूप से सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। चूँकि प्रतिक्रियाएँ बहुमत में सहमति की श्रेणी में हैं, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसके स्थान पर वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली इन मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उद्देश्य 4 आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन के प्रति शिक्षकों की धारणा का अध्ययन करना।

तालिका 4.4

प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
समावेशन आवश्यक	48	80%
तटस्थ	6	10%
आवश्यक नहीं	6	10%
कुल	60	100%

माध्य (Mean) = 4.22

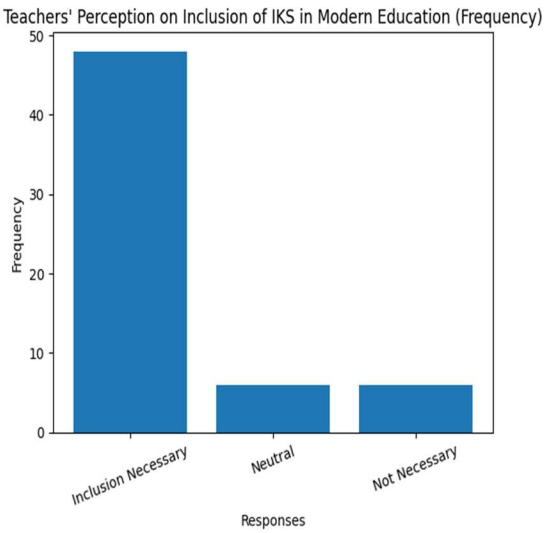

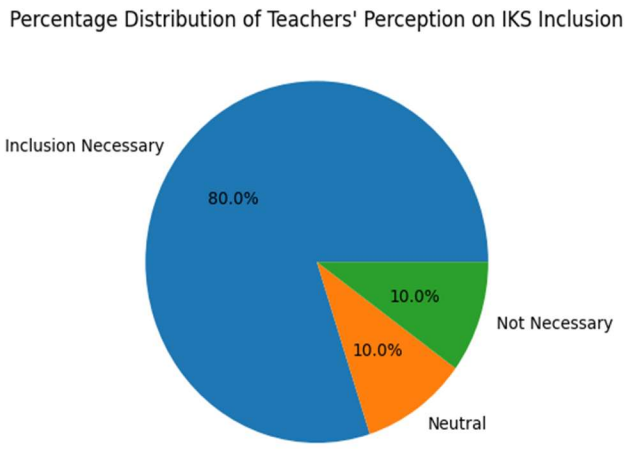

विश्लेषण

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कुल 60 शिक्षकों में से 48 (80%) ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन को आवश्यक माना है। केवल 10% शिक्षक तटस्थ रहे, जबकि 10% ने इसे आवश्यक नहीं माना। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षकों का प्रबल बहुमत समावेशन के पक्ष में है। 4.22 का माध्य उच्च स्तर की सहमति को दर्शाता है, जो सकारात्मक दृष्टिकोण का संकेतक है। आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में भारतीय परंपरागत ज्ञान के प्रति विश्वास एवं स्वीकृति का स्तर उच्च है। विरोध या असहमति का प्रतिशत अत्यंत कम है, जिससे समावेशन के प्रति व्यापक समर्थन परिलक्षित होता है। इस प्रकार सांख्यिकीय परिणाम शिक्षकों की सकारात्मक धारणा को प्रमाणित करते हैं।

व्याख्या

यह परिणाम दर्शाता है कि शिक्षक आधुनिक शिक्षा को केवल पाश्चात्य ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध करना चाहते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित नैतिकता, आध्यात्मिकता, अनुभवात्मक अधिगम तथा समग्र विकास की अवधारणाएँ शिक्षकों को प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। शिक्षकों का मानना है कि इन तत्वों के समावेशन से शिक्षा अधिक मूल्यपरक एवं जीवनोपयोगी बनेगी। यह दृष्टिकोण वर्तमान शैक्षिक सुधारों की दिशा से भी मेल खाता है। विशेष रूप से National Education Policy 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम

में सम्मिलित करने पर बल दिया गया है। अतः शिक्षकों की धारणा राष्ट्रीय शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप एवं समर्थनकारी है।

परिकल्पना परीक्षण (H_{04})

H_{04} यह मानती थी कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन के प्रति शिक्षकों की कोई विशेष सकारात्मक धारणा नहीं है। किंतु प्राप्त आंकड़ों में 80% शिक्षकों ने समावेशन का समर्थन किया है तथा माध्य 4.22 उच्च सहमति को दर्शाता है। अतः सांख्यिकीय परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना (H_{04}) अस्वीकृत की जाती है। निष्कर्षतः यह सिद्ध होता है कि शिक्षकों की धारणा सकारात्मक एवं समर्थनकारी है।

चर्चा एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा के विकास की संभावनाओं का परीक्षण करना तथा शिक्षकों की धारणा का विश्लेषण करना था। अध्याय 4 में प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट रूप से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि शिक्षकों का दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति सकारात्मक एवं समर्थनकारी है। चारों उद्देश्यों के अंतर्गत प्राप्त परिणामों में माध्य 4 से अधिक पाया गया, जो उच्च स्तर की सहमति को दर्शाता है। यह संकेत करता है कि शिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली को मूल्य आधारित शिक्षा के विकास का एक प्रभावी माध्यम मानते हैं।

उद्देश्य 1 के अंतर्गत यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शिक्षक भारतीय ज्ञान प्रणाली को मूल्य शिक्षा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ मानते हैं। 70% से अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया और 4.16 का माध्य इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित नैतिकता, सह-अस्तित्व एवं आत्मसंयम जैसे तत्व आधुनिक शिक्षा में सार्थक योगदान दे सकते हैं। यह परिणाम पूर्ववर्ती अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें भारतीय ज्ञान प्रणाली को समग्र विकास का आधार माना गया है। उद्देश्य 2 के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 73.3% शिक्षकों का दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रति सकारात्मक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक इसे केवल पारंपरिक या सांस्कृतिक विषय नहीं, बल्कि व्यावहारिक एवं शैक्षिक रूप से प्रासंगिक मानते हैं। शिक्षकों की यह धारणा भविष्य में पाठ्यक्रम विकास एवं शिक्षण पद्धतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। उद्देश्य 3 के अंतर्गत नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों के विकास में भारतीय ज्ञान प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट हुई। सभी मूल्यों के लिए माध्य 4 से अधिक पाया गया, जो दर्शाता है कि शिक्षक इसे विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण का सशक्त माध्यम मानते हैं। यह परिणाम इस धारणा को पुष्ट करता है कि शिक्षा का

उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व एवं चरित्र का समग्र विकास भी है। उद्देश्य 4 के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि 80% शिक्षक आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन का समर्थन करते हैं। 4.22 का उच्च माध्य यह संकेत करता है कि समावेशन के प्रति स्पष्ट सकारात्मक रुझान है। यह परिणाम वर्तमान शैक्षिक सुधारों, विशेषकर नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों, के अनुरूप है। समग्र रूप से देखा जाए तो सभी शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं, जो इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा के विकास में प्रभावी है तथा शिक्षकों की धारणा इसके पक्ष में है।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा को सुदृढ़ करने की व्यापक संभावनाएँ रखती है। शिक्षकों की सकारात्मक धारणा यह संकेत करती है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह प्रणाली शिक्षा को केवल सूचना या कौशल तक सीमित न रखकर जीवन मूल्यों एवं चरित्र निर्माण से जोड़ती है। इसके अतिरिक्त, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्वों के समावेशन के प्रति शिक्षकों का स्पष्ट समर्थन यह दर्शाता है कि शैक्षिक सुधारों में इसकी स्वीकार्यता बढ़ रही है। यदि पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं शिक्षक प्रशिक्षण में भारतीय ज्ञान प्रणाली को समुचित स्थान दिया जाए, तो शिक्षा अधिक मानवीय, समग्र एवं मूल्यपरक बन सकती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्य आधारित शिक्षा के विकास का एक प्रभावी एवं प्रासंगिक आधार प्रदान करती है। इसके समुचित समावेशन से न केवल विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव है, बल्कि सामाजिक समरसता, नैतिक चेतना एवं जिम्मेदार नागरिकता को भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

References

- Bharali, R. K. (2025). Indian knowledge system in Indian education: A holistic approach to academic innovation. *International Journal of Research Culture Society, 9*(11).
- Das, R. K. (2023). Indian knowledge system and National Education Policy 2020. *Integrated Journal for Research in Arts and Humanities, 4*(4).
- Dutta, A., & Geeta. (2024). Indian knowledge system: Integrating ancient Indian education with modern education under NEP 2020. *Journal of East-West Thought, 14*(2).

- Jacob, R., & Gaur, R. (2023). Integrating Indian knowledge systems in secondary education: A pathway to holistic development. *Revista Electronica de Veterinaria, 25*(1).
- Jain, B. (2025). The need for the Indian knowledge system in the contemporary education system for sustainable life: A systematic review. *International Journal of Innovation in Engineering Research & Management, 12*(4), 159–163.
- Jeevan Kumar. (2025). Indian knowledge tradition and modern society: Values, change, and continuity—A sociological reflection. *Integral Research, 2*(11), 64–76.
- Joshi, J. H., & Sonara, H. J. (2024). Value based education in modern Indian education system. *Educational Administration: Theory and Practice, 30*(6), 99–103.
- Joshi, P., Kasbe, A., Gaur, G., & Barot, D. (2025). Reintegrating Indian knowledge systems in modern education: An analytical study. *Journal of Informatics Education and Research, 5*(2).
- Kumar, A. (2022). Indian knowledge systems and educational transformation in the 21st century. *Journal of Indian Education, 48*(2), 45–60.
- Lal, S. K., Srivastava, S., Narayan, V., Pal, N., Kumar, R., & Sinha, S. (2024). Indian knowledge system challenges and its application in higher education for sustainable future development. *Library Progress International, 44*(3).
- Mehta, T., & Singh, N. V. (2023). An exploration of the Indian knowledge system: Roots, significance, and contemporary relevance. *Bhartiya Knowledge Systems*.
- Mishra, S., & Tripathi, R. (2021). Indigenous knowledge and sustainable education practices in India. *International Journal of Educational Development, 82*, 102356.
- National Education Policy 2020. (2020). *Ministry of Education, Government of India*.
- Rao, P. V. (2022). Traditional knowledge and curriculum reforms in India. *Educational Philosophy and Theory, 54*(8), 1123–1135.
- Saraswati, B. (2021). Indian philosophical foundations of value-based education. *Journal of Dharma Studies, 6*(1), 89–104.
- Sharma, M., Awasthi, S., & Soni, Y. (2023). Indian knowledge system relevance and practices under National Education Policy 2020. *Journal of the Oriental Institute, 73*(3).
- Shrimalibhoi, N. R., & Patel, S. (2024). Integrating Indian knowledge system in education: Roles of teachers, schools, and governments. *International Journal of Scientific Research in Humanities and Social Sciences*.
- Singh, R., & Kulkarni, S. (2022). Holistic development through Indian knowledge systems. *Contemporary Education Dialogue, 19*(2), 210–228.

- Thakur, D. (2023). Cultural sustainability and Indian knowledge traditions. *Journal of Cultural Studies, 15*(4), 301–318.
- Upadhyay, N. (2021). Revitalizing indigenous knowledge in teacher education programs. *Teacher Education Quarterly, 48*(3), 67–84.